

प्रारंभिक परीक्षा

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार - 2025

संदर्भ

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने स्वच्छ वायु सर्वेक्षण 2025 के पुरस्कारों की घोषणा की।

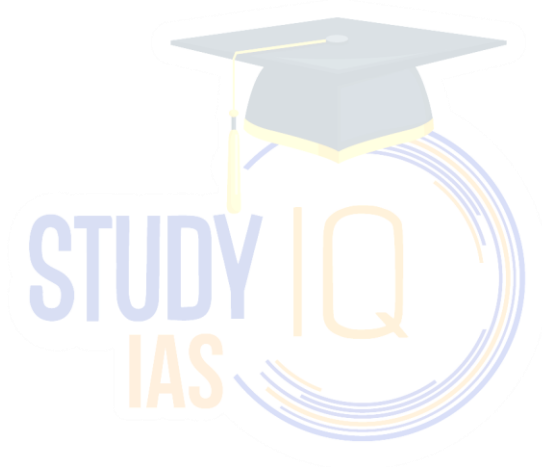
स्वच्छ वायु सर्वेक्षण क्या है?

- यह राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के अंतर्गत शहरों की वार्षिक रैंकिंग है।
- 2021 से आयोजित, 130 शहरों तक विस्तारित।
- उद्देश्य:
 - शहरों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
 - वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए शहरों को शीघ्र कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना।
 - जवाबदेही और सार्वजनिक जागरूकता पैदा करना।
- मूल्यांकन:
 - बहुस्तरीय एवं कठोर कार्यप्रणाली।
 - निम्नलिखित संकेतकों के आधार पर:
 - PM10 और PM2.5 के स्तर में कमी।
 - सड़क धूल प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, वाहन प्रदूषण नियंत्रण।
 - हरितीकरण, ईवी अपनाना, सी एंड डी अपशिष्ट प्रबंधन।
 - सार्वजनिक परिवहन विद्युतीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना।
- श्रेणियाँ:
 - श्रेणी-1: 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर।
 - श्रेणी-2: 3-10 लाख जनसंख्या वाले शहर।
 - श्रेणी-3: 3 लाख से कम जनसंख्या वाले शहर।
- नकद पुरस्कार: रैंक और शहर के आकार से जुड़ा हुआ (उदाहरण के लिए, इंदौर को ₹1.5 करोड़ मिले)।
- एकीकरण: स्वच्छ भारत मिशन (शहरी), अमृत, स्मार्ट सिटी मिशन, सतत, फेम-II, नगर वन योजना जैसी अन्य सरकारी योजनाओं के साथ संरेखित।

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार - 2025 की मुख्य विशेषताएं -

- वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए अभिनव और प्रभावी उपायों के लिए 11 शहरों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।

- इंदौर ने 200/200 के पूर्ण स्कोर के साथ प्रथम रैंक (श्रेणी-1, जनसंख्या >10 लाख) हासिल की।
 - इंदौर और उदयपुर को रामसर कन्वेंशन के तहत वेटलैंड शहरों के रूप में मान्यता दी गई।
 - स्थानीय कार्रवाई को गहन बनाने के लिए वार्ड स्तर पर स्वच्छ वायु सर्वेक्षण दिशा-निर्देशों का शुभारंभ।
 - ★ NCAP के अंतर्गत सर्वोत्तम प्रथाओं का संग्रह जारी किया गया।
 - प्रगति: 130 में से 103 शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार (PM10 में कमी) देखा गया।
 - 64 शहरों ने 20% PM10 कमी हासिल की, और 25 शहरों ने 40% कमी हासिल की (2017-2025)।
 - जुटाई गई धनराशि: 1.55 लाख करोड़ रुपये (केन्द्र, राज्य और शहरी स्थानीय निकाय संयुक्त)।
- स्रोत: [पीआईबी](#)



यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (UPU)

संदर्भ

भारत ने दुबई में आयोजित 28वें यूनिवर्सल पोस्टल कांग्रेस में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) - यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (UPU) एकीकरण परियोजना की शुरुआत की।

इसका महत्व क्या है?

- सीमा पार धन हस्तांतरण को तेज, सस्ता और सुरक्षित बनाता है।
- प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, की सहायता करता है।
- UPI की गति के साथ डाक नेटवर्क के विश्वास का उपयोग करता है।
- वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है और भारत के डिजिटल इंडिया एवं विकसित भारत विजन का समर्थन करता है।
- दक्षिण-दक्षिण सहयोग और UPU शासन में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।

UPU क्या है?

- **स्थापना:** 1874,
- **मुख्यालय:** बर्न, स्विट्जरलैंड।
- **स्थिति:** 1948 से संयुक्त राष्ट्र (UN) की एक विशेष एजेंसी।
- **सदस्यता:** 192 सदस्य देश।
 - संयुक्त राष्ट्र का कोई भी गैर-सदस्य देश UPU का सदस्य बन सकता है, बशर्ते कि उसके अनुरोध को UPU के कम से कम दो-तिहाई सदस्य देशों द्वारा अनुमोदित किया जाए।
- **कार्य:**
 - सदस्य राष्ट्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय डाक नीतियों का समन्वय करना।
 - सुचारू, सस्ती और विश्वसनीय सीमा पार मेल और वित्तीय सेवाएं सुनिश्चित करना।
 - डाक प्रणालियों (पता प्रारूप, डाक कोड, पार्सल ट्रैकिंग, आदि) का मानकीकरण करना।
 - डाक नेटवर्क के माध्यम से ई-कॉमर्स और डिजिटल वित्तीय सेवाओं में सहयोग को प्रोत्साहित करना।

स्रोत: [पीआईबी](#)

भारत के उपराष्ट्रपति

संदर्भ

महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन भारत के 17वें उपराष्ट्रपति चुने गए हैं।

उपराष्ट्रपति के चुनाव की प्रक्रिया -

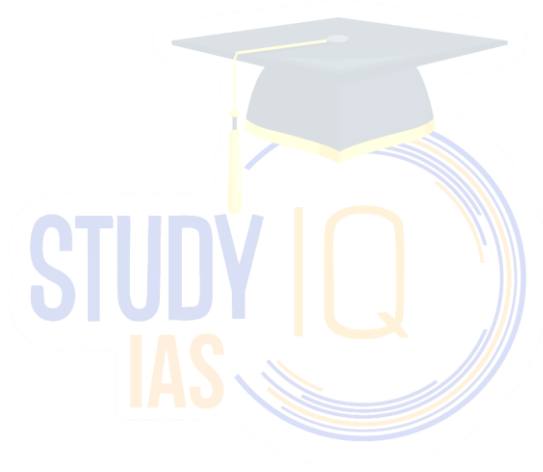
- **निर्वाचक मंडल:** इसमें संसद के दोनों सदनों (लोकसभा + राज्यसभा) के सदस्य शामिल होते हैं।
 - राष्ट्रपति के चुनाव के विपरीत, राज्य विधानमंडल के सदस्य इसमें भाग नहीं लेते हैं।
- **मतदान प्रणाली:** एकल हस्तांतरणीय मत (STV) प्रणाली का उपयोग करके आनुपातिक प्रतिनिधित्व के माध्यम से संचालित।
 - मतदान गुप्त मतदान द्वारा होता है।
- **पात्रता मापदंड:**
 - भारत का नागरिक होना चाहिए।
 - कम से कम 35 वर्ष की आयु।
 - राज्यसभा सदस्य के रूप में चुनाव के लिए अर्हता प्राप्त।
 - भारत सरकार/राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए।
- भारतीय निर्वाचन आयोग (ECI) द्वारा संचालित।
 - रिटर्निंग ऑफिसर आमतौर पर राज्यसभा का महासचिव होता है।

भारत के उपराष्ट्रपति बनाम पश्चिमी समकक्ष (उदाहरण के लिए अमेरिका)		
विशेषता	भारत	यूएसए (पश्चिमी मॉडल)
चुनाव	एकल संक्रमणीय मत (STV) प्रणाली का उपयोग करके सांसदों (लोकसभा + राज्यसभा) द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव।	राष्ट्रपति टिकट (राष्ट्रपति + उपराष्ट्रपति साथ में) के हिस्से के रूप में, नागरिकों द्वारा सीधे चुना जाता है।
अवधि	5 साल	4 वर्ष
विधायिका में भूमिका	राज्यसभा के पदेन सभापति।	सीनेट के अध्यक्ष।
उत्तराधिकार	रिक्त पद की स्थिति में नए राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक भारत के राष्ट्रपति के रूप में कार्य करता है।	प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी; रिक्ति के तुरंत बाद पूर्ण राष्ट्रपति बन जाता है।

भारत के उपराष्ट्रपति बनाम पश्चिमी समकक्ष (उदाहरण के लिए अमेरिका)

राजनीतिक स्थिति	राज्यसभा में भूमिका को छोड़कर अधिकतर औपचारिक; कार्यकारी शासन में कम दिखाई देता है।	उच्च-स्तरीय राजनीतिक भूमिका; प्रायः "प्रतीक्षित राष्ट्रपति(President-in-waiting)" के रूप में देखा जाता है।
-----------------	--	--

स्रोत: [द हिंदू](#)



दुर्लभ मृदाओं के वैश्विक भंडार और उत्पादन

संदर्भ

चीन के उद्योग और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने दुर्लभ मृदा खनन और प्रसंस्करण पर नियमों को कड़ा कर दिया है, ताकि खनन, परिशोधन और निर्यात पर निगरानी को केंद्रीकृत किया जा सके।

दुर्लभ मृदाओं के वैश्विक भंडार और उत्पादन की स्थिति -

● दुर्लभ मृदाओं के वैश्विक भंडार (अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण 2025 के अनुसार)

- चीन: 48.9%
- ब्राज़ील: 23.3%
- वियतनाम: 7.7%
- ऑस्ट्रेलिया: 6.3%
- रूस: 4.2%
- भारत: 3.9%
- अमेरिका: 2.1%
- अन्य (दक्षिण अफ्रीका, तंजानिया, कनाडा, आदि): <2%

● दुर्लभ मृदाओं का वैश्विक उत्पादन (2020-25 अनुमान)

- चीन: वैश्विक उत्पादन का 65.8%
- अमेरिका: 13.2%
- बर्मा (म्यांमार): 9%
- ऑस्ट्रेलिया: 5.6%
- थाईलैंड: 2.1%
- नाइजीरिया: 1.2%
- भारत: 0.9%

Chart 3: Major exporters of rare earth. Figures in % shows their share in global exports

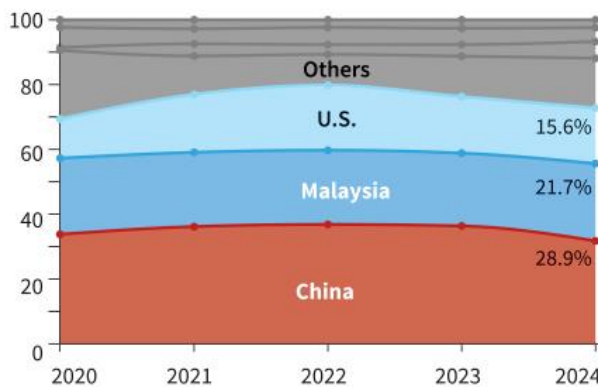
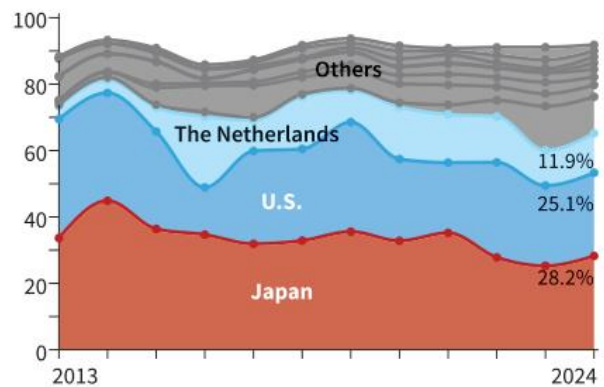


Chart 5: Major importers of China's rare earth. Figures in % shows their share in China's exports



स्रोत: [द हिंदू](#)

रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX)

संदर्भ

iDEX-DIO(रक्षा नवाचार संगठन) ने EdCIL (इंडिया) लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य दोहरे उपयोग वाली अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास को प्रोत्साहित करना है। यह पहल रक्षा विशेषज्ञता को उभरते हुए एड-टेक समाधानों से जोड़ती है और नए ASPIRE (Accelerating Strategic Progress in Research and Education) कार्यक्रम द्वारा संचालित है।

रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार या Innovations for Defence Excellence (iDex) पहल के बारे में -

- 2018 में लॉन्च किया गया।
- कार्यान्वयन निकाय: रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत के अंतर्गत रक्षा नवाचार संगठन (DIO)।
- iDEX के उद्देश्य -
 - तीव्र विकास: रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के त्वरित विकास को सुगम बनाना।
 - स्टार्टअप्स के साथ जुड़ाव: रक्षा क्षेत्र में नवीन स्टार्टअप्स के साथ सहयोग और सह-निर्माण को प्रोत्साहित करना।
 - प्रौद्योगिकी सह-निर्माण को सशक्त बनाना: रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्रों में सह-नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- वित्तपोषण और समर्थन
 - उपलब्ध अनुदान:
 - परियोजनाओं के लिए ₹1.50 करोड़ तक।
 - iDEX प्राइम पहल के तहत ₹10 करोड़ तक।
 - समर्थन फ्रेमवर्क: इसमें अनुसंधान और विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रोटोटाइप और अनुसंधान किकस्टार्ट (SPARK) फ्रेमवर्क के लिए समर्थन शामिल है।

iDEX योजना की संबंधित पहल -

रक्षा भारत स्टार्टअप चुनौतियां (DISC)

- उद्देश्य: सशस्त्र बलों, रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (डीपीएसयू) और आयुध कारखानों (ओएफबी) के सामने आने वाली विशिष्ट समस्याओं का समाधान करने के लिए इसे शुरू किया गया।
- संरचना: रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी विभिन्न समस्या विवरणों के समाधान प्रदान करने के लिए स्टार्टअप्स और नवप्रवर्तकों को आमंत्रित किया जाता है।
- वित्तपोषण: विजेताओं को SPARK फ्रेमवर्क के माध्यम से प्रोटोटाइप विकास के लिए 1.5 करोड़ रुपये तक का अनुदान प्राप्त होगा।

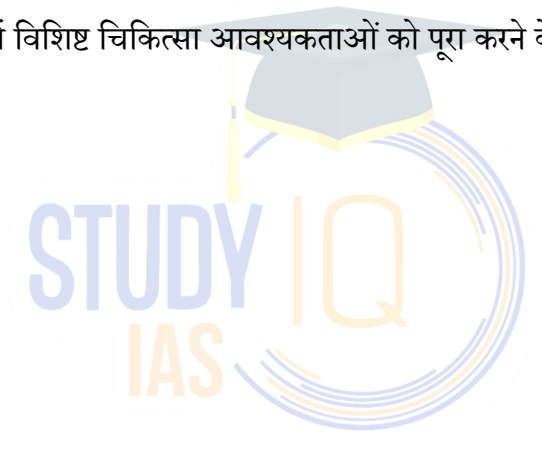
ADITI चुनौतियाँ

- इसका उद्देश्य रक्षा क्षेत्र के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों का विकास करना है।
- **ADITI 2.0:** हाल ही में लॉन्च किया गया, जिसमें सशस्त्र बलों और संबद्ध एजेंसियों की 19 चुनौतियाँ शामिल हैं, जो निम्नलिखित क्षेत्रों पर केंद्रित हैं:
 - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)
 - क्वांटम प्रौद्योगिकी
 - सैन्य संचार
 - ड्रोन-रोधी प्रणालियाँ
 - अनुकूली छलावरण
- **वित्तपोषण:** महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति को लक्षित करते हुए ₹25 करोड़ तक का अनुदान प्रदान किया जाता है।

चिकित्सा नवाचार और अनुसंधान उन्नति (MIRA) पहल -

- DISC का एक भाग, MIRA सशस्त्र बलों के लिए अनुकूलित चिकित्सा प्रौद्योगिकियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह सैन्य वातावरण में विशिष्ट चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लक्षित चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

स्रोत: [पीआईबी](#)



संक्षेप में समाचार

ZAPAD अभ्यास 2025	समाचार? भारत रूस में बहुपक्षीय संयुक्त सैन्य अभ्यास ZAPAD 2025 में भाग लेगा। अभ्यास के बारे में - ● प्रकार: रूस द्वारा आयोजित बहुपक्षीय रणनीतिक/सैन्य अभ्यास। ● प्रतिभागी: रूस, भारत और कई अन्य देश (प्रत्येक संस्करण में भिन्नता होती है)। ● बेलारूस, बांग्लादेश, बुर्किना फ़ासो, कांगो, माली, भारत, ईरान, नाइजर और ताजिकिस्तान इसमें भाग ले रहे हैं, जबकि कंबोडिया, चीन, क्यूबा, कजाकिस्तान, मंगोलिया, म्यांमार, निकारागुआ, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान, सर्बिया, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और उज्बेकिस्तान पर्यवेक्षक हैं। भारत से 70 सदस्यों का एक दल ZAPAD के लिए रूस जा रहा है। ● उद्देश्य: ○ सैन्य सहयोग को मजबूत करना। ○ पारंपरिक और आतंकवाद-रोधी अभियानों में अंतर-संचालनशीलता में सुधार करना। ○ विनिमय रणनीति, तकनीक और प्रक्रियाएं (टीटीपी)। संबंधित तथ्य ● भारत ने 2021 और 2025 में इस अभ्यास में भाग लिया। स्रोत: पीआईबी
यूके इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग ब्रिज (UKIIFB)	समाचार? यूके-इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग ब्रिज (UKIIFB) वर्ष-1 रिपोर्ट (2025) जारी। यूके-भारत इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग ब्रिज (UKIIFB) क्या है? ● भारत (नीति आयोग) और यू.के. (सिटी ऑफ लंदन कॉर्पोरेशन) के बीच एक द्विपक्षीय पहल। ● शुभारंभ: सितंबर 2023 में 12वीं यूके-भारत आर्थिक और वित्तीय वार्ता के दौरान, और बाद में सितंबर 2024 में औपचारिक रूप दिया गया। ● उद्देश्य: ○ भारत की बड़े पैमाने की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए दीर्घकालिक "धैर्यवान पूंजी" आकर्षित करना। ○ लंदन के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र और विशेषज्ञता का उपयोग

	करके भारत के बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण अंतर को पाटना। ● कार्य: ○ वैश्विक स्तर पर मानकीकृत परियोजना मूल्यांकन ढांचे का विकास करना। ○ परियोजना नियोजन में जलवायु अनुकूलन, ईएसजी और लचीलेपन को एकीकृत करना। ○ निवेशक रिटर्न की सुरक्षा के लिए जोखिम-साझाकरण तंत्र को बेहतर बनाना। ○ वैश्विक निवेशकों के साथ परीक्षण करके पारदर्शी परियोजना पाइपलाइनों का निर्माण करना। ○ शासन और जवाबदेही के लिए डिजिटल निगरानी को प्रोत्साहित करना। ● फोकस क्षेत्र (अब तक): ○ राजमार्ग, एक्सप्रेसवे और तीव्र परिवहन प्रणालियाँ ○ हरित हाइड्रोजन, अपतटीय पवन और टिकाऊ बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में विस्तार करना। स्रोत: पीआईबी
ग्रैंड इथियोपियन रेनेसां डैम(GERD)	समाचार? इथियोपिया ने ग्रैंड इथियोपियन रेनेसां डैम (GERD) का उद्घाटन किया है। इसके बारे में - ● गुबा, बेनिशांगुल-गुमुज क्षेत्र, इथियोपिया में सूडान की सीमा के पास स्थित है। ● नील नदी की एक प्रमुख सहायक नदी, ब्लू नील नदी पर निर्मित। ● 2011 में शुरू हुआ। ● इथियोपिया के लिए महत्व: ○ बड़े पैमाने पर बिजली उत्पादन उपलब्ध कराता है (अफ्रीका में इथोपिया में बिजली की पहुंच दर सबसे कम है)। ○ इससे इथियोपिया को 'हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका' में एक ऊर्जा केंद्र बनाने की उम्मीद है, जिससे पड़ोसी देशों (सूडान, जिबूती, केन्या) को बिजली निर्यात संभव हो सकेगा। स्रोत: द हिंदू

समाचार में स्थान

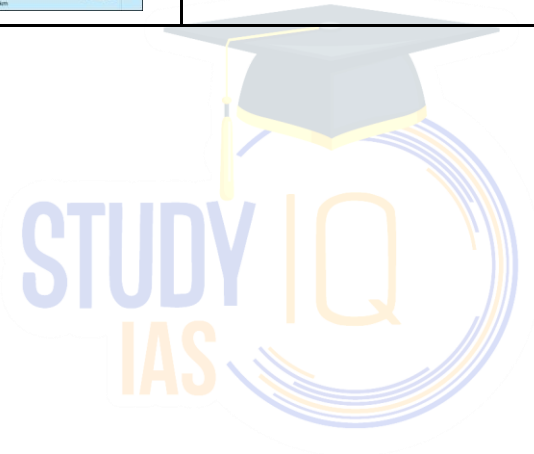
एविया द्वीप (यूबोइया) द्वीप



समाचार? ग्रीक द्वीप एविया (जिसे यूबोइया भी कहते हैं) के निकट समुद्र में 5.2 तीव्रता का मध्यम भूकंप आया।
इसके बारे में -

- दूसरा सबसे बड़ा ग्रीक द्वीप (क्रेते के बाद)।
- मध्य ग्रीस के पूर्वी तट पर स्थित है, तथा युरिपस जलडमरूमध्य द्वारा मुख्य भूमि से अलग है।
- एथेंस (ग्रीस की राजधानी) के निकट।

स्रोत: [द हिंदू](#)



मुख्य परीक्षा

भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र

संदर्भ

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (2020-2025) के पांच वर्ष पूरे होने पर, भारत का मत्स्य पालन क्षेत्र नीली अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ बन गया है, जिसने उत्पादन और निर्यात के रिकॉर्ड स्तर हासिल किए हैं।

भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र की वर्तमान स्थिति (2025)

- वैश्विक स्थिति: भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक है (वैश्विक उत्पादन का ~ 8%)।
- जीवीए में योगदान: मत्स्य पालन भारत के सकल घरेलू उत्पाद में ~ 1.24% और कृषि जीवीए में ~ 7.7% का योगदान देता है।
- रोजगार: लगभग 3 करोड़ लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं।
- निर्यात: मत्स्य निर्यात भारत के कृषि निर्यात में लगभग 20% का योगदान देता है।
- मत्स्य पालन के प्रकार:
 - समुद्री मत्स्य पालन - समुद्र तट के साथ।
 - अंतर्देशीय मत्स्य पालन - नदियाँ, जलाशय, तालाब; भारत विश्व स्तर पर सबसे बड़ा अंतर्देशीय मछली उत्पादक है।
 - जलीय कृषि (मीठे पानी और खारे पानी): भारत ड्रींगिंग का सबसे बड़ा उत्पादक है और विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक है।
- सबसे बड़े उत्पादक (राज्यवार): आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, ओडिशा, तमिलनाडु।
- समुद्री भोजन का प्रमुख निर्यात गंतव्य:
 1. अमेरिका
 2. यूरोपीय संघ
 - चीन, जापान, वियतनाम और थाईलैंड भी भारत के प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यात गंतव्य हैं।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)

- मत्स्य पालन क्षेत्र को पारिस्थितिक रूप से स्वस्थ, आर्थिक रूप से व्यवहार्य और सामाजिक रूप से समावेशी बनाने के लिए PMMSY को सितंबर 2020 में लॉन्च किया गया था।
- निवेश का आकार (2020-25): ₹20,050 करोड़ (मत्स्य पालन में अब तक का सबसे बड़ा निवेश)।
- उद्देश्य:
 - उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना।
 - मूल्य श्रृंखला दक्षता और फसलोत्तर बुनियादी ढांचे में सुधार।
 - महिलाओं और मछलीपालकों को सशक्त बनाना।
 - निर्यात और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत करना।
- 5 वर्षों में उपलब्धियाँ:
 - मछली उत्पादन: 2024-25 में 195 लाख टन (2019-20 में 141.64 लाख टन से अधिक)।
 - जलीय कृषि उत्पादकता: 3 टन/हेक्टेयर (2019-20) से बढ़कर 4.7 टन/हेक्टेयर (फरवरी 2025) हो गई।
 - रोजगार: 58 लाख नौकरियाँ सृजित (दिसंबर 2024 तक 55 लाख का लक्ष्य पार किया गया)।
 - महिला सशक्तिकरण: ₹4,061.96 करोड़ (2020-21 से 2024-25) की स्वीकृत परियोजनाओं के माध्यम से 99,018 महिलाओं को सशक्त बनाया गया।
 - निर्यात: ₹46,662.85 करोड़ (2019-20) से बढ़कर ₹60,524.89 करोड़ (2023-24) हो गया।

मत्स्य पालन क्षेत्र में चुनौतियाँ -

- अत्यधिक मछली पकड़ना और संसाधनों का हास: अनियमित मछली पकड़ने की प्रथाओं के कारण समुद्री स्टॉक पर भारी दबाव है। प्रति इकाई प्रयास में घटती पकड़ मछुआरों की लाभप्रदता को कम करती है।
- मछली पकड़ने के बाद की हानियाँ: खराब शीत श्रृंखला और भंडारण बुनियादी ढांचे के कारण कुल मछली पकड़ का लगभग 20% नष्ट हो जाता है।
- जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय तनाव: समुद्र की सतह का बढ़ता तापमान, बार-बार आने वाले चक्रवात और महासागरीय अम्लीकरण समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा हैं। तटीय कटाव और लवणीय जल का अतिक्रमण पारंपरिक मछली पकड़ने की आजीविका को बाधित कर रहा है।
- खंडित और अनौपचारिक क्षेत्र: अधिकांश मछुआरे छोटे पैमाने के मछुआरे हैं जिनकी औपचारिक ऋण, बीमा और सामाजिक सुरक्षा तक सीमित पहुँच है। संगठित बाजारों का अभाव उन्हें संकटग्रस्त बिक्री के लिए मजबूर करता है।
- प्रौद्योगिकी का कम उपयोग: आधुनिक जलीय कृषि प्रौद्योगिकियाँ जैसे आरएएस, आईओटी-आधारित जल गुणवत्ता निगरानी और ड्रोन पायलट परियोजनाओं तक ही सीमित हैं।

- **निर्यात एवं गुणवत्ता संबंधी चुनौतियाँ:** अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों का अपर्याप्त अनुपालन तथा आधुनिक प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग सुविधाओं का अभाव निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करता है।
- **संस्थागत एवं नीतिगत अंतराल:** केंद्र और राज्यों के बीच अतिव्यापी अधिकार क्षेत्र विनियामक सुधारों में देरी करते हैं।

मत्स्य उत्पादन में प्रौद्योगिकी एकीकरण -

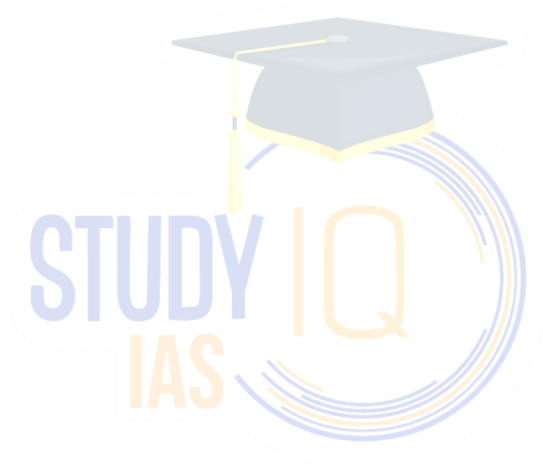
- **बायोफ्लोक प्रौद्योगिकी (बीएफटी):** पोषक तत्वों को पुनः चक्रित करने के लिए सूक्ष्मजीवों का उपयोग करती है, पानी के उपयोग को कम करती है, और प्राकृतिक आहार प्रदान करती है।
 - **उदाहरण:** कपिल तलवार (उत्तराखंड) ने PMMSY सब्सिडी के तहत 50 बायोफ्लोक टैंक स्थापित किए, जिससे रोजगार सृजन हुआ और सजावटी जलीय कृषि को बढ़ावा मिला।
- **पुनःपरिसंचरण जलीय कृषि प्रणालियाँ (आरएएस):** जल संरक्षण, भंडारण घनत्व में वृद्धि, शहरी जलीय कृषि को सक्षम बनाती हैं।
- **समुद्री मत्स्य पालन में उपग्रह एवं जीआईएस:** संभावित मत्स्य पालन क्षेत्रों (पीएफजेड) पर उपग्रह आधारित परामर्श ईंधन के उपयोग को कम करते हैं और दक्षता में सुधार करते हैं।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म: एनएफडीपी (2024):** योजना लाभ, ऋण, बीमा, ई-व्यापार के लिए एकल-खिड़की प्रणाली।
 - मछली विपणन के लिए e-NAM एकीकरण।
- **ड्रोन और IoT सेंसर:** वास्तविक समय में पानी की गुणवत्ता, भोजन और मछली के स्वास्थ्य की निगरानी।
- **कोल्ड-चेन और स्मार्ट लॉजिस्टिक्स:** सौर ऊर्जा चालित कोल्ड स्टोरेज, मछली व्यापार के लिए ई-प्लेटफॉर्म बेहतर कीमतें और कम अपव्यय सुनिश्चित करते हैं।

आगे की राह -

- **स्थिरता प्रथम:** उच्च उत्पादन और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच संतुलन।
- **मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना:** शीत भंडारण, प्रसंस्करण इकाइयों और निर्यात केंद्रों का विस्तार करना।
- **सामाजिक सुरक्षा जाल:** मछुआरों के लिए बीमा और पेंशन योजनाओं का सार्वभौमिकीकरण।
- **महिला-केंद्रित दृष्टिकोण:** महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों और एफएफपीओ का विस्तार करना।
- **नीली अर्थव्यवस्था रणनीति:** मत्स्य पालन को समुद्री पर्यटन, शिपिंग और नवीकरणीय ऊर्जा के साथ एकीकृत करना।
- **अनुसंधान एवं नवाचार:** आनुवंशिकी, प्रजनन, जलवायु-लचीली प्रजातियों में अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करना।

- अंतर्राष्ट्रीय मानक: निर्यात के लिए पता लगाने की क्षमता, प्रमाणन और गुणवत्ता अनुपालन को मजबूत करना।

स्रोत: [पीआईबी](#)



नेपाल का राजनीतिक संकट और भारत के पड़ोस में अस्थिरता

संदर्भ

हाल ही में नेपाल में जेन-जी (Gen Z) के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शन, जो एक विवादास्पद सोशल मीडिया प्रतिबंध से शुरू हुए थे, हिंसक झड़पों, भारी जनहानि, आगजनी और प्रधानमंत्री के पी. शर्मा ओली के इस्तीफे तक जा पहुँचे।

नेपाल का राजनीतिक संकट -

विरोध प्रदर्शनों के तत्काल ट्रिगर

- **सोशल मीडिया प्रतिबंध (सितंबर 2025):** नेपाल ने गलत सूचना और साइबर अपराध पर अंकुश लगाने के लिए फेसबुक, एक्स और यूट्यूब सहित 26 प्लेटफार्मों को अवरुद्ध (BLOCK) कर दिया।
- **युवा प्रतिक्रिया:** जेन-जी ने इसे मुक्त अभिव्यक्ति पर हमले के रूप में देखा; विरोध प्रदर्शनों में निराशा झलकी:
 - बढ़ती बेरोजगारी (~20%)।
 - भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद ("नेपो किड्स" विवाद)।
 - शासन में जवाबदेही का अभाव।
- **उग्रता:** शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन जल्द ही हिंसक हो गया; सिंह दरबार (पीएमओ), संसद, सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति निवास सहित सरकारी भवनों पर हमला किया गया और उन्हें आग लगा दी गई।

नेपाल की लोकतांत्रिक अस्थिरता – पृष्ठभूमि -

- **राजतंत्र से गणतंत्र:** नेपाल ने 2008 में राजतंत्र को समाप्त कर दिया तथा एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य को अपना लिया।
- **लगातार राजनीतिक बदलाव:** तब से, नेपाल ने 17 वर्षों में 13 सरकारें देखी हैं, जो गहरी अस्थिरता को दर्शाती हैं।
- **गुट्टीय राजनीति:** प्रमुख पार्टियां (नेपाली कांग्रेस, सीपीएन-यूएमएल, माओवादी) अक्सर बिखर जाती हैं, जिससे अस्थिर गठबंधन बनते हैं।
- **संवैधानिक मुद्दे:** 2015 के संविधान को प्रतिनिधित्व और संघवाद को लेकर मधेसी समूहों के विरोध का सामना करना पड़ा।
- **राजशाही समर्थक विरोध प्रदर्शन (2025):** काठमांडू में बड़ी रैलियों में पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह के अधीन हिंदू राजशाही की वापसी की मांग की गई।
- **चीन कारक:** बीजिंग अक्सर नेपाल के शासक वर्ग को बचाता है और आर्थिक परियोजनाओं को आगे बढ़ाता है, जिससे घरेलू और बाहरी राजनीति जटिल हो जाती है।

भारत के लिए निहितार्थ -

- **सीमा सुरक्षा चिंताएँ:** भारत और नेपाल एक खुली सीमा (1,770 किमी) साझा करते हैं। अस्थिरता से अवैध प्रवास, तस्करी, सीमा पार से आतंकवाद और शरणार्थियों की आमद का खतरा रहता है।

- **व्यापार और संपर्क में व्यवधान:** नेपाल ईंधन, भोजन और दवाओं के लिए भारत पर बहुत अधिक निर्भर है। इस उथल-पुथल से द्विपक्षीय व्यापार (लगभग 9 अरब अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष) और राजमार्गों, रेल संपर्कों और बिजली ग्रिड जैसी संपर्क परियोजनाओं को खतरा है।
- **क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भारत की भूमिका:** नेपाल में संकटों का प्रबंधन भारत की "पड़ोसी प्रथम" नीति के लिए महत्वपूर्ण है। भारत की प्रतिक्रिया दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक स्थिरता के रक्षक के रूप में उसकी सॉफ्ट पावर छवि को आकार देगी।
- **चीन के साथ सामरिक संतुलन:** अस्थिरता नेपाल को बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के ज़रिए चीन के करीब ला सकती है। अगर भारत को एक अविश्वसनीय साझेदार के रूप में देखा गया, तो उसे अपना सामरिक प्रभाव खोने का खतरा है।
- **भारतीय प्रवासियों और पर्यटन पर प्रभाव:** नेपाल में हजारों भारतीय पर्यटकों और व्यवसायों को व्यवधानों का सामना करना पड़ा। पर्यटन, जो नेपाल के लिए राजस्व का एक प्रमुख स्रोत है, भारतीय टूर ऑपरेटरों और एयरलाइनों को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

भारत के पड़ोस में अस्थिरता और इसके निहितार्थ -

भारत के पड़ोस में अस्थिरता का सामना कर रहे देश

1. पाकिस्तान:

- राजनीति:** नागरिक सरकारों और शक्तिशाली सेना के बीच लगातार टकराव। राजनीतिक दल अस्थिर हैं और अक्सर अपना कार्यकाल पूरा होने से पहले ही सत्ता से बाहर हो जाते हैं।
- अर्थव्यवस्था:** आईएमएफ बेलआउट पर भारी निर्भरता, बढ़ता कर्ज, बहुत अधिक मुद्रास्फीति और बेरोजगारी।
- सुरक्षा:** सीमापार आतंकवाद भारत के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय बना हुआ है।
- चीन की भूमिका:** चीन ने BRI के भाग, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) के माध्यम से मजबूत पकड़ बना ली है।

2. बांग्लादेश:

- राजनीति:** हाल ही में छात्र-जनता के विद्रोह के कारण प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा। सत्तावाद और सत्ता के दुरुपयोग के आरोपों के साथ लोकतांत्रिक पतन हुआ।
- शरणार्थी मुद्दा:** रोहिंग्या शरणार्थी संकट से मानवीय और सुरक्षा संबंधी चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं।
- भूराजनीति:** भारत (सुरक्षा और व्यापार के लिए) और चीन (बड़ी अवसंरचना परियोजनाओं के लिए) के साथ संबंधों में संतुलन बनाए रखना।

3. श्रीलंका:

- अर्थव्यवस्था:** 2022 से गंभीर वित्तीय संकट - ऋण चूक, विदेशी मुद्रा की कमी और मुद्रास्फीति। मितव्ययिता उपायों के साथ IMF के बचाव पैकेज पर निर्भरता।
- राजनीति:** 2022-23 में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों ने सत्तारूढ़ नेतृत्व को उखाड़ फेंका, जिससे अस्थिरता पैदा हुई।
- चीन की भूमिका:** चीन ने बंदरगाहों (जैसे हंबनटोटा) और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश किया है, जिससे "ऋण-जाल कूटनीति" की चिंताएं बढ़ गई हैं।

4. म्यांमार:

- राजनीति:** 2021 के सैन्य तख्तापलट के कारण गृहयुद्ध और लोकतंत्र का हिंसक दमन हुआ।
- उग्रवाद:** कई जातीय सशस्त्र समूह सक्रिय हैं, विशेषकर भारत-म्यांमार सीमा पर (जो पूर्वोत्तर भारत को प्रभावित करते हैं)।
- चीन की भूमिका:** चीन पाइपलाइनों, बंदरगाहों और बुनियादी ढांचे में निवेश कर रहा है, जिससे उसकी पकड़ मजबूत हो रही है।

5. नेपाल:

- राजनीति:** बेहद अस्थिर - 17 सालों में 13 सरकारों। 2025 तक जेन-जी (Gen Z) के मौजूदा विरोध प्रदर्शन भ्रष्टाचार और सोशल मीडिया पर पाबंदियों के खिलाफ गुस्से को उजागर करते हैं।
- भूराजनीति:** भारत (ऐतिहासिक संबंध, खुली सीमा) और चीन (बुनियादी ढांचा और निवेश) के बीच संतुलन बनाना।

6. मालदीव:

- राजनीति:** सत्ता भारत समर्थक और चीन समर्थक शासनों के बीच बारी-बारी से आती है।
- सामरिक भूमिका:** हिंद महासागर में महत्वपूर्ण स्थान, जिससे यह आशंका बढ़ रही है कि चीन भविष्य में इसे नौसैनिक अड्डे के रूप में उपयोग कर सकता है।

भारत पर पड़ोसी अस्थिरता के प्रभाव -

सुरक्षा चिंताएं:

- पाकिस्तान से सीमा पार आतंकवाद और बांग्लादेश तथा अफगानिस्तान से (अप्रत्यक्ष रूप से) कट्टरपंथ का खतरा।
- संकट के समय म्यांमार (मिजोरम, मणिपुर), बांग्लादेश (रोहिंग्या) और संभवतः नेपाल से शरणार्थियों का आगमन।
- पाकिस्तान (ग्वादर, सीपीईसी) और श्रीलंका (हंबनटोटा बंदरगाह) में चीनी सैन्य उपस्थिति दीर्घकालिक रणनीतिक जोखिम पैदा करती है।
- छिद्रपूर्ण सीमाओं के माध्यम से हथियारों, नशीले पदार्थों और मानव तस्करी की तस्करी।

कूटनीतिक और रणनीतिक चुनौतियाँ

- भारत की "पड़ोसी प्रथम" और "एक्ट ईस्ट" नीतियों को तब झटका लगता है जब शासन व्यवस्था चीन की ओर झुकती है।
- बार-बार होने वाली राजनीतिक अस्थिरता भारत को दीर्घकालिक रणनीतिक योजना बनाने के बजाय निरंतर संकट प्रबंधन के लिए बाध्य करती है।
- क्षेत्रीय स्थिरता के रूप में भारत की छवि को चुनौती दी गई है, जिससे बाहरी शक्तियों (चीन, अमेरिका, खाड़ी देशों) को जगह मिल गई है।

सीमा प्रबंधन के मुद्दे

- अशांति के दौरान नेपाल और भूटान के साथ खुली सीमाएं असुरक्षित हो जाती हैं।
- म्यांमार में हिंसा और उग्रवाद भारत के पूर्वोत्तर में फैल गया है, जिससे स्थानीय अशांति बढ़ रही है।

- बांग्लादेश से अवैध प्रवासन असम और पश्चिम बंगाल में सामाजिक और राजनीतिक तनाव बढ़ाता है।

आर्थिक और व्यापारिक व्यवधान

- श्रीलंका और नेपाल में राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता से भारतीय निर्यात और पर्यटन राजस्व में कमी आई है।
- बंदरगाह अस्थिरता (श्रीलंका, मालदीव) भारत की ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं और समुद्री व्यापार मार्गों के लिए खतरा है।
- भारत-म्यांमार-थाईलैंड राजमार्ग और तापी पाइपलाइन जैसी परियोजनाएं अशांति के कारण विलंबित हो रही हैं।
- सार्क जैसे क्षेत्रीय आर्थिक समूह राजनीतिक घर्षण के कारण अप्रभावी बने हुए हैं।

भारत की वैश्विक आकांक्षाएँ

- पड़ोस में अस्थिरता भारत के क्षेत्रीय नेता और वैश्विक शक्ति होने के दावे को कमजोर करती है।
- चीन अपनी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का विस्तार करने के लिए रिक्त स्थानों का फायदा उठा रहा है, तथा भारत के प्रभाव को चुनौती दे रहा है।
- **वैश्विक धारणा:** यदि भारत अपने पड़ोस को स्थिर नहीं कर पाता है, तो वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में उसकी विश्वसनीयता कमजोर हो सकती है।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#), [द हिंदू](#)